संवाद

आज हर अभिभावक चाहता है कि उसका बच्चा पढ़े और जीवन में आगे बढ़े। इसी अपेक्षा के साथ अभिभावक अपने बच्चों का विद्यालय में दाखिला कराते हैं। सरकार द्वारा भी देश में शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया की धुरी है। यही कारण है कि हमारे समाज में शिक्षक का हमेशा गरिमामय स्थान रहा है। शिक्षक बच्चे का पथ प्रदर्शक होता है। वह उसे विषय का ज्ञान देने के साथ-साथ जीवन जीने की कला भी सिखाता है। बदलते समय के साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी बदलाव आए हैं। बदलते सामाजिक, आर्थिक समीकरण, व्यापक होती सोच के बीच शिक्षक की भूमिका भी व्यापक हुई है। सूचना क्रांति के इस युग में आज शिक्षकों की भूमिका कई मायनों में पहले से अधिक चुनौतीपूर्ण हो गई है।

शिक्षक से अभिभावक तथा समाज को बहुत अपेक्षाएँ हैं। शिक्षक ही तो है, जिसके भरोसे अभिभावक बहुत-सी आशाओं और महत्त्वाकांक्षाओं के साथ अपने बच्चों का विद्यालयों में दाखिला कराते हैं। लेकिन क्या हमारे सभी शिक्षक साथी अभिभावक तथा समाज की उम्मीदों की कसौटी पर खरा उतरने की कोशिश करते हैं? हम कक्षाओं में झाँकें तो कई बार देखने को मिलता है कि जो समय बच्चे को सृजनशील बनाने में लगाना चाहिए, उस समय में कई बार शिक्षक अनावश्यक सूचनाओं/जानकारियों को विद्यार्थियों के मस्तिष्क में ज़बरन ठूँसने और थोपने में लगे रहते हैं। इसका दुष्प्रभाव बच्चों की सृजनशीलता पर पड़ता है। बच्चा स्वभाव से सक्रिय है। उसे एक जगह बैठा कर अनुशासन में जकड़ते हुए ज़बरन पाठ्यपुस्तकें थोपी जाती हैं तो उसका बचपन भी मानो कुचल दिया जाता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था – शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को ज़बरन ठूँसे बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे। और यह एक समझदार तथा संवेदनशील शिक्षक ही कर सकता है। संवेदनशील शिक्षक ही बच्चों में मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। बच्चों में बचपन से ही जेंडर के मुद्दे के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास में भी शिक्षक अप्रतिम योगदान कर सकता है। यह सब कोई भी शिक्षक तभी कर सकता है जब बच्चे से वह एक स्नेहिल रिश्ता बनाए। बच्चे में यह अहसास जगाए कि मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ। बच्चे के मन में शिक्षक के प्रति अटूट विश्वास की भावना एक बार जाग्रत हो जाए तो बच्चा सीखने की राह में कदम-दर-कदम बढ़ाता ही चलता है। बच्चे से एक स्नेहपूर्ण आत्मीय नाता

बनाने के लिए ज़रूरी है, उसकी बातों को धैर्य के साथ सुनना, और उसे उसकी भाषा और संस्कृति को सम्मान देना। बच्चे को विशेष रूप से पहली कक्षा में अपने घर की बोली में बात करने की आज़ादी देना। यदि शिक्षक ऐसा करें तो कुछ भी सीखना-सिखाना असंभव नहीं है और कक्षाएँ जीवंत बनी रह सकती हैं। इसके लिए ज़रूरी है कि नयी-नयी पुस्तकें पढ़ने की ललक भी शिक्षक में जीवनपर्यंत बनी रहे क्योंकि बहुत-सी समस्याओं का समाधान तो उसे किताबों में डूबने-उतरने के दौरान ही अनायास मिल जाता है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में पठनीय स्तंभ की शुरूआत की गई थी। इस स्तंभ में ऐसी पुस्तकों के बारे में दिया जाता है जो बच्चे की शिक्षा से सरोकार रखने वाले हर व्यक्ति चाहे वह शिक्षक, अभिभावक या अन्य कोई भी हो, को ज़रूर पढ़नी चाहिए। इस पत्रिका के विभिन्न अंकों में अब तक आप तोत्तोचान , शिक्षक हो तो, दिवास्वप्न (गिजूभाई बधेका), असफल स्कूल, बच्चे असफ़ल क्यों होते हैं? (जॉन होल्ट), बच्चे की भाषा और अध्यापक (कृष्ण कुमार), मैं इस तरह नहीं पढ़ूँगी (रमेश दवे) आदि के बारे में पढ़ चुके हैं। इसी क्रम में इस अंक में हम लेकर आए हैं, सिलविया एश्टन वॉरनर की विश्वप्रसिद्ध पुस्तक – अध्यापक। इसकी भूमिका में हरबर्ट रीड लिखते हैं कि यह एक महत्वपूर्ण पुस्तक है – इतिहास की तारीख में, आज की तारीख में कोई पुस्तक जितनी हो सकती है उतनी ही महत्वपूर्ण। सिलविया एश्टन वॉरनर का विश्वास है कि उन्होंने अध्यापन की ऐसी पद्धति खोज निकाली है जो मानव को स्वाभाविक और स्वत: स्फूर्त ढंग से शांतिप्रेमी बनाएगी। यह पुस्तक एक शिक्षाशास्त्रीय प्रबंध नहीं बल्कि समाजशास्त्रीय दस्तावेज़ है। फ़िर भी यह अत्यंत मार्मिक है और सर्वत्र अध्यापन कार्य पर इसका लाभकारी प्रभाव पड़ेगा।

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद निश्चित रूप से सीखने-सिखाने, विशेष रूप से पढ़ना-लिखना, में आपके नज़रिए में बदलाव आएगा ।

प्रस्तुत अंक के कुछ लेख विद्यालय और कक्षाओं में वास्तविक रूप से क्या हो रहा है, इसकी तसवीर पेश करते हैं और हमें सोचने के लिए विवश करते हैं, वहीं कुछ लेख सीखने-सिखाने की प्रक्रिया की ओर ध्यान दिलाते हुए कुछ नया करने, रचनात्मक तरीके से कैसे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया अपनायी जाए, इस दिशा में सुझाव भी देते हैं। कक्षा अनुभवों पर आधारित लेखों को पढ़ते समय आपके मन में कई बार यह बात आएगी कि मैं भी तो ऐसा कर सकती/सकता हूँ।

प्रत्येक वर्ष की तरह इस साल भी डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जन्मतिथि पाँच सितंबर को हम शिक्षक दिवस मनाएँगे। कितना अच्छा हो यदि इस साल शिक्षक दिवस के पुनीत पर्व पर हम सभी यह संकल्प लें कि बच्चों को उनके सभी अधिकार देकर उन्हें उनका

बचपन जीने देंगे तथा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में उनके साथी बनेंगे। और यह तभी संभव होगा जब हमारे मन में भी नन्हे-मुन्नों के प्रति किसी भी प्रकार का अन्याय होते देख प्रसिद्ध शिक्षाविद् गिजुभाई की तरह इस प्रकार की कसक हो —

जब तक बच्चे घरों में मार खाते हैं,
और विद्यालयों में गालियाँ खाते हैं,
तब तक मुझे चैन कैसे पड़े?
जब तक बच्चों के लिए पाठशालाएँ, वाचनालय
बाग-बगीचे और क्रीड़ांगन न बनें,
तब तक मुझे चैन कैसे पड़े?
जब तक बच्चों को प्रेम और सम्मान नहीं मिलता
तब तक मुझे चैन कैसे पड़े?

अकादमिक संपादक